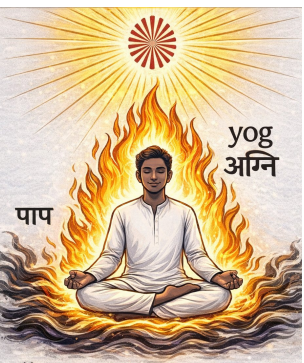




21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

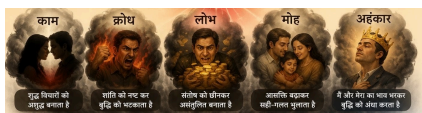
"मीठे बच्चे - योग अग्नि से पापों को भस्म कर सम्पूर्ण सतोप्रधान बनना है, कोई भी पाप कर्म नहीं करना है"



प्रश्न:- सतयुग में ऊंच पद किस आधार पर मिलता है? यहाँ का कौन सा कायदा सबको सुनाओ?

उत्तर:- सतयुग में पवित्रता के आधार पर ऊंच पद मिलता है। जो पवित्रता की कम धारणा करते हैं वह सतयुग में देरी से आते हैं और पद भी कम पाते हैं।

यहाँ जब कोई आता है तो उन्हें कायदा सुनाओ दे दान तो छूटे ग्रहण। 5 विकारों का दान दो तो तुम 16 कला सम्पूर्ण बन जायेंगे। तुम बच्चे भी अपनी दिल से पूछो कि हमारे में कोई विकार तो नहीं हैं?



Self Checking



आसुरी अवगुण
रूपी कांटे

- क्रोध
- लोभ
- मोह
- अहंकार
- ईर्ष्या
- आलस्य
- नफरत

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। **रूहानी बाप रूहानी बच्चों को**

समझाते हैं कि मनुष्यों को कैसे समझाओ कि अब

स्वर्ग की स्थापना हो रही है। 5 हजार वर्ष पहले भी

भारत में स्वर्ग था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था।

विचार करना चाहिए, उस समय कितने मनुष्य थे।

सतयुग आदि में बहुत करके 9-10 लाख होंगे।

शुरूआत में झाड़ छोटा ही होता है। इस समय

जबकि कलियुग का अन्त है तो कितना बड़ा झाड़

हो गया है, अब इसका विनाश भी जरूर होना है।

बच्चे समझते हैं यह वही महाभारत लड़ाई है। इस

समय ही गीता के भगवान ने राजयोग सिखाया और

देवी-देवता धर्म की स्थापना की। संगम पर ही अनेक

धर्मों का विनाश, एक धर्म की स्थापना हुई थी। बच्चे

यह भी जानते हैं कि आज से 5 हजार वर्ष पहले

भारत स्वर्ग था और कोई धर्म नहीं था। ऐसी नई

दुनिया स्थापन करने बाप संगम पर आते हैं। अब

वह स्थापन हो रही है। पुरानी दुनिया विनाश हो

जायेगी। सतयुग में एक ही भारत खण्ड था और

कोई खण्ड था नहीं। अभी तो कितने खण्ड हैं। भारत

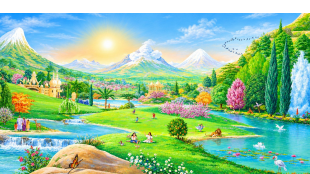
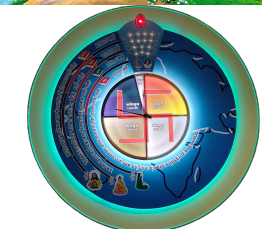
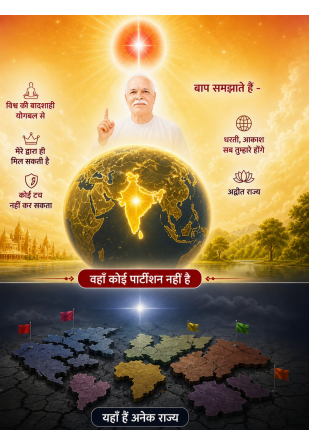
खण्ड भी है परन्तु इसमें आदि सनातन देवी-देवता

धर्म है नहीं। वह प्रायः लोप हो गया है। अब फिर

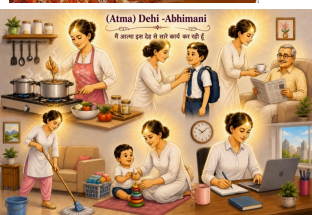
5000 वर्ष
पहले



8 अरब की आबादी तक का सफर		
आबादी	साल	कितने वर्ष लगे
1 अरब	1804	पहली बार दुनिया में 1 अरब लोग हुए
1 से 2 अरब	1804 से 1927	123 साल लगे
2 से 3 अरब	1927 से 1960	33 साल
3 से 4 अरब	1960 से 1974	14 साल
4 से 5 अरब	1974 से 1987	13 साल
5 से 6 अरब	1987 से 1999	12 साल
6 से 7 अरब	1999 से 2011	12 साल
7 से 7.9 अरब	2011 से 2022	11 साल
15 नवंबर 2022 को होंगे आठ अरब लोग		



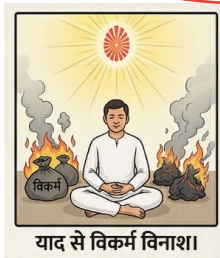
Points: **ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.**



21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा **स्थापना** कर रहे हैं।
बाकी सब धर्म **विनाश** हो जाते हैं। **यह तो याद**
रखना है कि सतयुग त्रेता में कोई और राज्य नहीं था
और सब धर्म अभी आये हैं। **कितना दुःख अशान्ति**
मारामारी है। महाभारी महाभारत लड़ाई भी वही है।

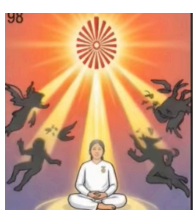
एक तरफ यूरोपवासी **यादव** भी हैं। 5 हजार
वर्ष पहले भी इन्होंने मूसलों की (मिसाइल्स की)
इन्वेन्शन की थी। **कौरव पाण्डव** भी थे। **पाण्डवों**
की तरफ खुद परमपिता परमात्मा मददगार था।

सभी को यही कहा कि **गृहस्थ व्यवहार में रहते मुझे**
याद करने से तुम्हारे पाप बढ़ेंगे नहीं और पास्ट के
विकर्म विनाश होंगे।



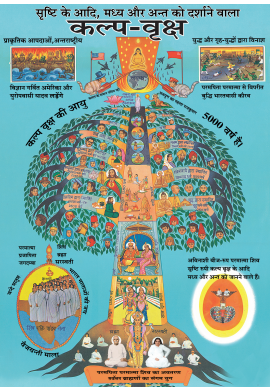
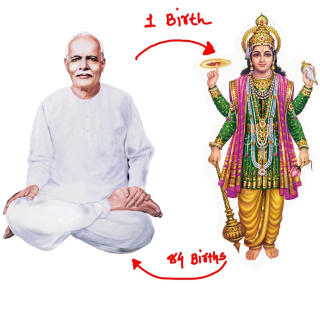
Double फायदा

अभी बाप समझाते हैं, **तुम ही भारतवासी सतयुग में**
जो **सतोप्रधान** थे, वह **इस समय 84 जन्म लेते-लेते**
अब तुम्हारी आत्मा **तमोप्रधान बन गई है। अब**
सतोप्रधान कैसे बनें। सतोप्रधान तब बनेंगे जब मुझ
पतित-पावन बाप को याद करेंगे। इस योग अग्नि से
ही पाप भस्म होंगे और आत्मा सतोप्रधान बन

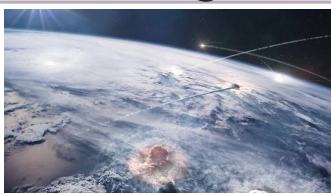


Points: **ज्ञान योग धारणा सेवा**





21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन जायेगी। और फिर स्वर्ग में 21 जन्मों के लिए वर्सा पायेंगे। बाकी इस पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है। भारत सतयुग में श्रेष्ठाचारी था और सृष्टि के आदि में बहुत थोड़े मनुष्य थे। भारत स्वर्ग था, दूसरे कोई खण्ड नहीं थे। अभी और धर्म बढ़ते-बढ़ते झाड़ कितना बड़ा हो गया है और तमोप्रधान जड़ जड़ीभूत हो गया है। अब इस तमोप्रधान झाड़ का विनाश और नई देवी-देवता धर्म के झाड़ की स्थापना जरूर चाहिए। संगम पर ही होगा। अभी तुम हो संगम पर। आदि सनातन देवी-देवता धर्म का अभी सैपलिंग लग रहा है। पतित मनुष्यों को बाप पावन बना रहे हैं, वह फिर देवता बनेंगे। जो पहले नम्बर में थे जिन्होंने 84 जन्म लिए हैं। वही फिर पहले नम्बर में आयेंगे। सबसे पहले-पहले देवी-देवताओं का पार्ट था। वही पहले बिछुड़े हैं। फिर उन्हीं का ही पार्ट होना चाहिए ना। सतयुग में हैं ही सर्वगुण सम्पन्न.... अभी है विशश वर्ल्ड, रात-दिन का फ़र्क है। अभी विशश वर्ल्ड को वाइसलेस वर्ल्ड कौन बनाये। पुकारते भी हैं हे पावन बनाने वाले आओ। अभी वह आया है। बाप कहते हैं हम तुमको वाइसलेस बना रहे हैं। इस विशश दुनिया के विनाश के लिए लड़ाई लगनी है।



योग



M.imp.



21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



अब वह कहते हैं एक मत कैसे हो क्योंकि अभी

अनेक मत हैं ना। अनेक इतने मत-मतान्तरों के

अन्दर एक धर्म की मत कौन स्थापन करे। बाप

समझाते हैं अभी एक मत की स्थापना हो रही है।

बाकी सब विनाश हो जायेंगे। आदि सनातन देवी-

देवता धर्म वाले जो पावन थे, वही फिर 84 जन्म

भोग अब पतित बने हैं। फिर बाप आकर

भारतवासियों को फिर से स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं

अर्थात् असुर से देवता बना रहे हैं। तुम किसको भी

समझा सकते हो कि बाप कहते हैं मुझे याद करो तो

तुम पतित से पावन बन जायेंगे। अब तुम ज्ञान चिता

पर बैठो। चिता पर बैठने से तुम पावन बन जाते हो।

फिर द्वापर में रावण राज्य होने कारण काम चिता

पर बैठते-बैठते भ्रष्टाचारी दुनिया बन गई है। आज से

5 हजार वर्ष पहले देवी-देवता थे। थोड़े मनुष्य थे।

अभी तो कितने आसुरी बन पड़े हैं। और धर्म भी एड

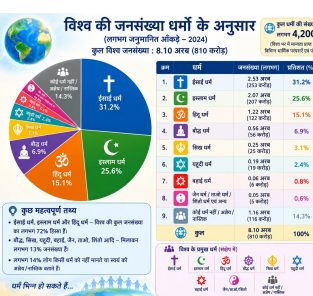
हो झाड़ बड़ा हो गया है। बाप समझाते हैं झाड़

जड़जड़ीभूत हो गया है। अब फिर मुझे एक मत का

राज्य स्थापन करना है। भारतवासी कहते भी हैं एक

धर्म में एक मत हो। यह भारतवासी भूल गये हैं कि

सतयुग में एक ही धर्म था। यहाँ तो अनेक धर्म हैं।



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अब बाप आकर फिर से एक धर्म स्थापन कर रहे हैं।

तुम बच्चे राजयोग सीख रहे हो। जरूर भगवान ही

राजयोग सिखायेंगे। यह किसको पता नहीं है।

प्रदर्शनी का उद्घाटन जब कोई करने आते हैं तो

उनको भी समझाना चाहिए - तुम किसका उद्घाटन

करते हो। बाप इस भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। बाकी

नर्कवासी सब विनाश हो जायेंगे। विनाश के पहले

जिनको बाप से वर्सा लेना है तो आकर समझें। यह

बी. के. का जो आश्रम है यह है क्वारनटाइन क्लास,

यहाँ 7 रोज़ क्लास करना है ताकि 5 विकार निकल

जाएं। देवताओं में यह 5 विकार होते नहीं। अब यहाँ

5 विकारों का दान देना है, तब ग्रहण छूटेगा। दे दान

तो छूटे ग्रहण। फिर तुम 16 कला सम्पूर्ण बन

जायेंगे। भारत सतयुग में 16 कला सम्पूर्ण था, अभी

तो कोई कला नहीं रही है। सब कंगाल बन पड़े हैं।

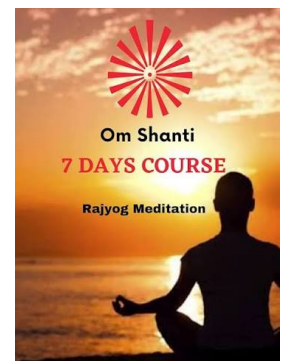
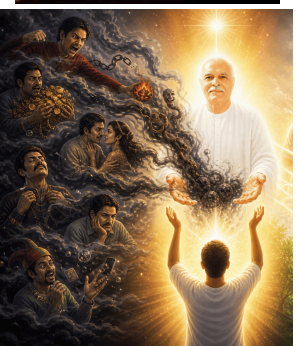
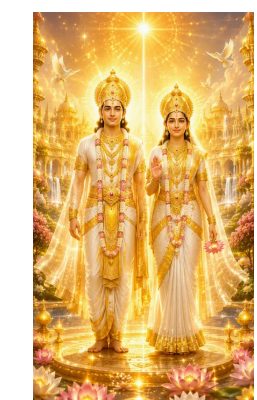
कोई ओपनिंग करने आते हैं, बोली, यहाँ का कायदा

है, बाप कहते हैं दे 5 विकारों का दान तो छूटे ग्रहण।

तुम 16 कला सम्पूर्ण देवता बन जायेंगे। पवित्रता

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

6



21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अनुसार पद पायेंगे। बाकी अगर कुछ न कुछ कला



कम रह गई तो जन्म भी देरी से लेंगे। विकारों का दान देना तो अच्छा है ना। चन्द्रमा को ग्रहण लगता है



तो आगे ब्राह्मण लोग दान लेते थे। अभी तो ब्राह्मण बड़े आदमी हो गये हैं। गरीब लोग तो बिचारे भीख



मांगते रहते, पुराने कपड़े आदि भी लेते रहते।

वास्तव में ब्राह्मण पुराने कपड़े नहीं लेते, उन्हीं को

नया दिया जाता है। तो अब तुम समझाते हो भारत

16 कला सम्पूर्ण था। अब आइरन एज्ड हो गया है।



5 विकारों का ग्रहण लगा हुआ है। अभी तुम जो 5

विकारों का दान दे यह अन्तिम जन्म पवित्र रहेंगे तो

नई दुनिया के मालिक बनेंगे। स्वर्ग में बहुत थोड़े थे।



पीछे वृद्धि को पाया है। अब तो विनाश भी सामने

खड़ा है। बाप कहते हैं - 5 विकारों का दान दो तो

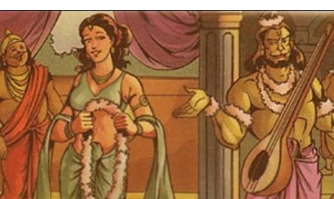


ग्रहण छूट जाए। अब तुमको श्रेष्ठाचारी बन स्वर्ग का

सूर्यवंशी राज्य लेना है, तो भ्रष्टाचार को छोड़ना

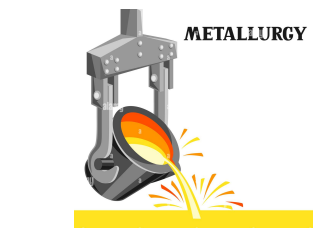
पड़ेगा। 5 विकारों का दान दो। अपनी दिल से पूछो

हम सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी बने हैं? नारद



का मिसाल है ना। एक भी विकार होगा तो लक्ष्मी

को वर कैसे सकेंगे। कोशिश करते रहो, खाद को

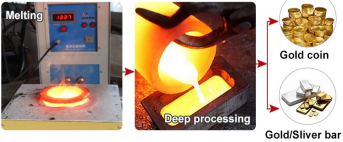


आग लगाते रहो। सोना जब गलाते हैं, गलते-गलते

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Point to ponder deeply...

21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



यदि आग ठण्डी हो जाती है तो खाद निकलती नहीं है, इसलिए पूरी आग में गलाते हैं। फिर जब देखते हैं



किचड़ा अलग हो गया है तब कार्ब में डालते हैं। बाप

अब खुद कहते हैं कोई भी विकार में मत जाओ।

तीव्र वेग से पुरुषार्थ करो। पहले तो पवित्रता की

प्रतिज्ञा करो। बाबा आप पावन बनाने आये हो, हम

कभी विकार में नहीं जायेंगे। देही-अभिमानि बनना

है। बाप हम आत्माओं को समझाते हैं। वह सुप्रीम

आत्मा है। तुम जानते हो हम पतित हैं। आत्मा में ही

संस्कार रहते हैं। मैं तुम्हारा बाप तुम आत्माओं से

बात करता हूँ। ऐसा कोई नहीं कह सकता मैं तुम्हारा

बाप परमात्मा हूँ। मैं आया हूँ पावन बनाने। तुम

पहले-पहले सतोप्रधान थे फिर सतो, रजो, तमो में

आये। तमोप्रधान बने हो। इस समय 5 तत्व भी

तमोप्रधान हैं इसलिए दुःख देते हैं। हर चीज़ दुःख

देती है। यही तत्व जब सतोप्रधान होते हैं तब सुख

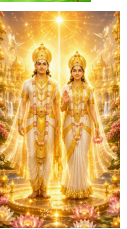
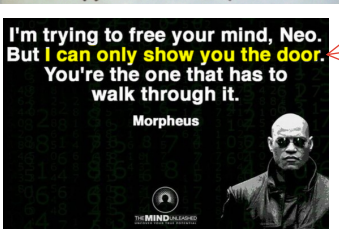
देते हैं। उसका नाम ही है - सुखधाम। यह है

दुःखधाम। सुखधाम है बेहद के बाप का वर्सा।

दुःखधाम है रावण का वर्सा, अब जितना श्रीमत पर

चलेंगे, उतना ऊंच बनेंगे। फिर प्रसिद्ध हो जायेंगे कि

कल्प-कल्प यह ऐसे ही पुरुषार्थ करने वाले हैं। यह



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

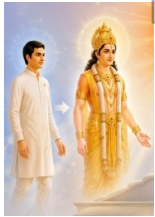
Coming soon...



May I have your Attention Please..!

अभी नहीं तो कभी नहीं

21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



कल्प-कल्प की बाजी है। जो जास्ती पुरुषार्थ कर रहे

हैं वह अपना राज्य भाग्य ले रहे हैं। ठीक पुरुषार्थ

नहीं किया होगा तो थर्ड ग्रेड में चला जायेगा। प्रजा में

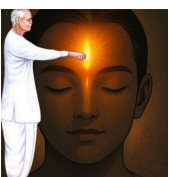
भी पता नहीं क्या जाकर बनेगा। लौकिक बाप भी

कहते हैं तुम हमारा नाम बदनाम करते हो, निकलो

घर से बाहर। बेहद का बाप भी कहते हैं तुमको माया

का थप्पड़ ऐसा लगेगा जो सूर्यवंशी चन्द्रवंशी में

आयेंगे ही नहीं। अपने आपको चमाट मार देंगे।



बाप तो कहते हैं वारिस बनो। राजतिलक लेना

चाहते हो तो मुझे याद करो और औरों को भी याद

दिलाओ तो तुम राजा बनेंगे। नम्बरवार तो होते हैं

ना। कोई बैरिस्टर एक-एक केस का लाखों रूपया

कमाते हैं और कोई-कोई को देखो पहनने के लिए

कोट भी नहीं होगा। पुरुषार्थ पर मदार है ना। तुम भी

पुरुषार्थ करेंगे तो ऊंच पद पायेंगे। मनुष्य से देवता

बनना है। चाहे मालिक बनो, चाहे प्रजा बनो। प्रजा में

भी नौकर-चाकर बनेंगे। स्टूडेंट की चलन से टीचर

समझ जाते हैं। वन्डर यह है जो पहले वाले से



Shivbaba Says
"I'm trying to free your mind, Neo. But I can only show you the door. You're the one that has to walk through it."

Points:

ज्ञान

योग

धारणा

सेवा

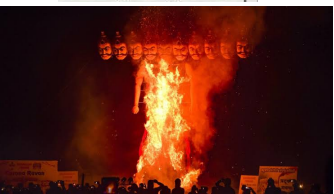
M.imp.

Choice is All yours...

21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



Wake up, 90 years lapsed..



पिछाड़ी वाले तीखे चले जाते हैं क्योंकि अभी दिन-प्रतिदिन रिफाइन प्वाइंट्स मिलती रहती हैं। सैपलिंग लगाते जाते हैं। पहले वाले तो कई भागन्ती हो गये। न्यू एड होते जाते हैं। नई-नई प्वाइंट्स मिलती जाती हैं। बहुत युक्ति से समझाया जाता है। बाबा कहते हैं बहुत गुह्य-गुह्य रमणीक बातें सुनाते हैं, जिससे तुम झट निश्चयबुद्धि हो जाओ। जहाँ तक मेरा पार्ट है, तुमको पढ़ाता रहूँगा। यह भी ड्रामा में नूँध है। जब कर्मातीत अवस्था को पायेंगे तब पढ़ाई पूरी होगी। बच्चे भी समझ जायेंगे। पिछाड़ी में इम्तहान की रिजल्ट मालूम होती है ना। इस पढ़ाई में नम्बरवन सब्जेक्ट है पवित्रता की। जब तक बाबा की याद नहीं रहती है, बाप की सर्विस नहीं करते हैं, तब तक आराम नहीं आना चाहिए। तुम्हारी लड़ाई है ही माया के साथ। रावण को भल जलाते हैं परन्तु जानते नहीं हैं कि यह है कौन। दशहरा बहुत मनाते हैं। अभी तुमको वन्दर लगता है - राम भगवान की भगवती सीता चुराई गई। फिर बन्दरों का लश्कर लिया। ऐसा कब हो सकता है क्या? कुछ भी समझते नहीं। तो जब प्रदर्शनी में आते हैं पहले-पहले बताना चाहिए भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तब कितने

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
मनुष्य होंगे। 5 हजार वर्ष की बात है। अभी कलियुग

है, वही महाभारी महाभारत लड़ाई भी है, बाप

आकर राजयोग सिखलाते हैं। विनाश भी होगा। यहाँ

एक धर्म एक मत अथवा पीस कैसे हो सकती है।

जितना माथा मारते हैं एक मत होने के लिए उतना

ही लड़ते हैं। बाप कहते हैं- अब मैं उन सबको

आपस में लड़ाए माखन तुमको दे देता हूँ। बाप

समझाते हैं जो करेगा सो पायेगा। कोई-कोई बच्चे

बाप से भी ऊंच बन सकते हैं। तुम मेरे से भी

साहूकार विश्व के मालिक बनोगे। मैं नहीं बनूँगा। मैं

तुम बच्चों की निष्काम सेवा करता हूँ। मैं दाता हूँ।

ऐसे कोई मत समझे हम शिवबाबा को 5 रूपया देते

हैं। परन्तु शिवबाबा से 5 पदम स्वर्ग में लेते हैं। तो

क्या यह देना हुआ! अगर समझते हैं कि हम देते हैं,

यह तो शिवबाबा की बड़ी इनसल्ट करते हैं। बाप

तुमको कितना ऊंच बनाते। तुम 5 रूपया शिवबाबा

के खजाने में देते हो। बाबा तुमको 5 करोड़ देते हैं।

कौड़ी से हीरे जैसा बना देते हैं। ऐसा कब संशय नहीं

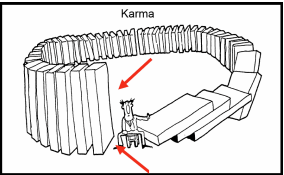
लाना कि हमने शिवबाबा को दिया। यह कितना

भोलानाथ है। यह कभी ख्याल नहीं आना चाहिए

हम बाबा को देते हैं। नहीं, शिवबाबा से हम 21

Points: **नम्र** **सेवा** **भारणा** **सेवा** **M.imp.**

M.M.M.....imp.



21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
जन्मों के लिए वर्सा लेते हैं। शुद्ध विचार से नहीं दिया
तो स्वीकार कैसे होगा। सब बातों की समझ बुद्धि में
रखनी चाहिए। ईश्वर अर्थ दान करते हैं, वह कोई
भूखा है क्या? नहीं, समझते हैं हमको दूसरे जन्म में
मिलेगा। अभी तुमको बाप, कर्म, अकर्म, विकर्म की
गति बैठ समझाते हैं। यहाँ जो कर्म करेंगे सो विकर्म
ही होगा क्योंकि रावण राज्य है। सतयुग में कर्म
अकर्म हो जाता है। हम तुमको अभी उस दुनिया में
ट्रांसफर करते हैं, जहाँ तुमसे विकर्म होगा ही नहीं।
बहुत बच्चे हो जायेंगे फिर तुम्हारे पैसे भी क्या
करेंगे। हम कच्चा सर्राफ नहीं हूँ, जो लेवें और काम
में न आये, फिर भरकर देना पड़े। मैं पक्का सर्राफ
हूँ। कह देंगे जरूरत नहीं। अच्छा!

Coming soon...

Just Churning(मन मत)

बाप का रूप प्यारा है,
धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।
AV: 25/11/95

मीठे ब्रह्मा बाबा है law maker
और धर्मराज होगा law enforce करवाने वाला Executive
सभी सेंटर्स से भंडारी निकलवा देंगे और आर्डर निकलेगा कि किसी से भी
पैसे स्वीकार नहीं होंगे।
फिर हम देखेंगे कि जिसने धन से सेवा नहीं की है, उनकी हालत कैसी तडपन
वाली होगी।(जैसे जल बिन मछली)



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा
का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की
रूहानी बच्चों को नमस्ते।

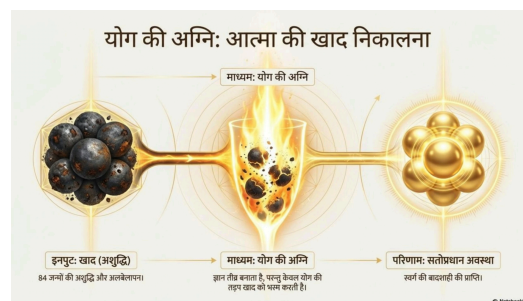


Points: ज्ञान योग धार

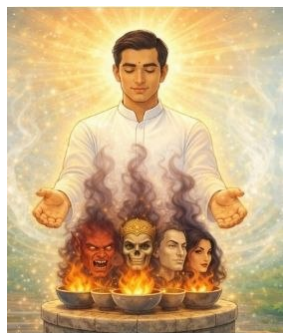
मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-



1) तीव्र वेग से पुरुषार्थ कर विकारों की खाद को योग की अग्नि में गला देना है। पवित्रता की पूरी प्रतिज्ञा करनी है।



2) कर्म-अकर्म-विकर्म की गति को बुद्धि में रखकर अपना सब कुछ नई दुनिया के लिए ट्रांसफर कर देना है।



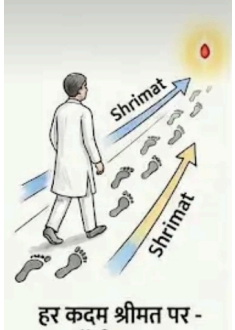
अचानक,
एक समय के बाद आप देना चाहेंगे तो भी
बाबा स्वीकार नहीं करेंगे।
बाबा कोई कच्चा सर्राफ नहीं है।
किसके लिए रुका है किसके लिए रुकेगा
करना है जो भी कर ले - यह वक्त जा रहा है

21-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

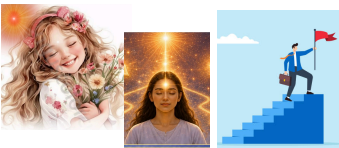
वरदान: श्रीमत के आधार पर खुशी, शक्ति और सफलता का अनुभव करने वाले सर्व प्राप्ति सम्पन्न भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement



हर कदम श्रीमत पर -



जो बच्चे स्वयं को ट्रस्टी समझकर श्रीमत प्रमाण चलते हैं, श्रीमत में जरा भी मनमत या परमत मिक्स नहीं करते उन्हें निरन्तर खुशी, शक्ति और सफलता की अनुभूति होती है।

Note it down

For Self Analysis



पुरुषार्थ वा मेहनत कम होते भी प्राप्ति ज्यादा हो तब कहेंगे यथार्थ श्रीमत पर चलने वाले।

परन्तु माया, ईश्वरीय मत में मनमत वा परमत को रायल रूप से मिक्स कर देती है इसलिए सर्व प्राप्तियों का अनुभव नहीं होता।

इसके लिए परखने और निर्णय करने की शक्ति धारण करो तो धोखा नहीं खायेंगे।



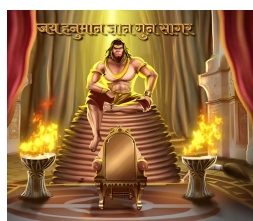
परखने की शक्ति



निर्णय शक्ति

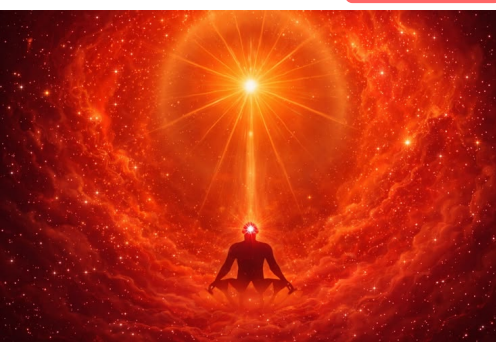


In front of Baba



In front of Baba

स्लोगन: बालक सो मालिक वह है जो तपस्या के बल से भाग्यविधाता बाप को अपना बना दे।



s: ज्ञान योग धार

M.imp.

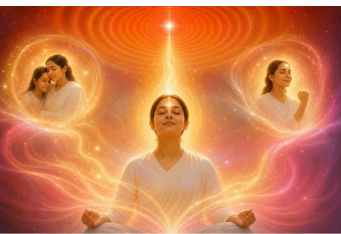
ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

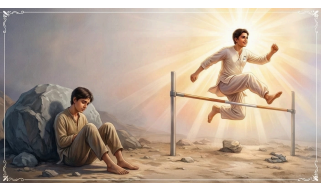
अपकारी पर भी उपकार करो



सन्तुष्ट को सन्तुष्ट रखना, स्नेही को स्नेह देना,
सहयोगी के साथ सहयोगी बनना यह महावीरता
नहीं है। समझा?



लेकिन कोई कितना भी असहयोगी बने, अपने
सहयोग की शक्ति से असहयोगी को सहयोगी बनाना
इसको महावीरता कहा जाता है।



कमजोर को कमजोर समझ छोड़ न दो। लेकिन
उसको बल देकर बलवान बनाओ, कमजोर को
हाईजम्प देने योग्य बनाओ तब कहेंगे महावीर
अथवा सब पर उपकार करने वाले।

If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26

Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.3.1 सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो:

(अ) मीठे बच्चे, सुबह का समय बहुत अच्छा है। सवेरे-सवेरे उठ यहाँ आकर बैठो तो याद ठहरेगी, फिर धीरे-धीरे आदत पड़ने से याद पक्की हो जायेगी। तुम देखते हो कई बच्चे सवेरे उठ नहीं सकते। 10-15 वर्ष मेहनत करते आये हैं, तो भी समय पर उठ नहीं सकते। कम से कम 3-4 बजे तो उठो। भक्त लोग भी सवेरे उठ कर ध्यान करते हैं, जाप करते हैं हनुमान का, शिव का। तो सवेरे-सवेरे उठ कर बाप को प्यार से याद करने की आदत पक्की डालनी है। रात को जल्दी सो जाओ। कोशिश करो रात को एक-दो बजे जागने की। बहुत जमा करना है ना! तुम नींद को जीतने वाले मशहूर हो।

हो जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

(आ) कॉलेज के बच्चे भी सवेरे उठ कर अध्ययन करते हैं। सवेरे क्यों बैठते हैं? क्योंकि आत्मा विश्राम कर रिफ्रेश हो जाती है। सवेरे उठने का शौक होना चाहिए। क्वीन विक्टोरिया का वज़ीर भी रात को बाहर बत्ती के नीचे जा कर पढ़ता था। भक्तिमार्ग में भी सवेरे उठते हैं। ज्ञानमार्ग में सवेरे उठ कर बाप को याद करना चाहिए। बाप कहते हैं तुम्हारा यह रूहानी धन्या बहुत अच्छा है। सवेरे और शाम को इस सर्विस में लग जाओ। शाम का समय 6 से 7 बजे का अच्छा होता है। सत्संग आदि भी सवेरे और शाम को करते हैं।

100

AmritVela.p65



2/18/2010, 11:58 AM

Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy and wise.
Benjamin Franklin



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

(इ) मीठे बच्चे, याद के लिए अमृतवेले का समय बहुत अच्छा है। उस समय अन्तर्मुखी बन आत्म-स्वरूप में स्थित होकर बैठ जाओ।

Attention...!

(ई) सवेरे-सवेरे उठ याद में ज़रूर बैठना चाहिए। इसमें गफलत नहीं करनी है। पुण्य का खाता जमा करना है। बच्चे, माया से भी डरो मत। भल कितना भी भुलाने की कोशिश करे, लेकिन थको नहीं। अमृतवेले उठ याद में रहने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करो। परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो फिर बहाने बहुत बनाते हैं। अगर सवेरे-सवेरे उठते नहीं हैं, तो जिन सोया तिन खोया। सिर्फ सोना और खाना — यह तो गँवाना है। इसलिए सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो।

